मसूर
(LENTIL)

मसूर दाल की एक ऐसी रबी फसल है, जिसे वर्षा का पानी संरक्षित करके अच्छी तरह उगाया जा सकता है। मसूर की फसल जाड़े और पाले को अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक सीमा तक सहन कर लेती है। मसूर की बढ़वार, पुष्पन या फसल की किसी भी अवस्था में वर्षा का अधिक बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रजातियाँ

पन्त मसूर– 639, पन्त मसूर– 406, पन्त मसूर– 234, पन्त मसूर– 4, पन्त मसूर– 5, पूसा वैभव, पूसा– 4, पूसा– 6, मल्लिका, डी0पी0एल0–15, डी0पी0एल0–62, प्रिया एवं नरेन्द्र मसूर–1

बीज एवं बोआई

बोआई का समय	बीज दर (प्रति हेक्टेयर)	बीज शोधन	बोआई की दूरी
समय से बोआई 15-अक्टूबर-15 नवम्बर देर से बोआई 31 दिसम्बर तक	40-60 किलोग्राम पिछेती व उतेरा : 60किलोग्राम मोटे दाने वाली : 60-75 किलोग्राम	5 ग्राम ट्राइकोडर्मा व 1 ग्राम वीटावैक्स प्रति किलोग्राम बीज / राइजोबियम कल्चर उपचार	20-25X3 सेंमी व 3-4 सेंमी गहराई, विलम्ब से बोआई पर दूरी : 15-20 सेंमी

उर्वरक प्रबन्धन

बोआई के समय (प्रति हे0)	44 किलोग्राम यूरिया	312-375 किलोग्राम एस.एस.पी.	34 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश

भूमि में जिंक की कमी होने पर प्रति हेक्टेयर 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट भी प्रयोग करना चाहिये।

जल प्रबन्धन

सामान्यतः मसूर में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु नमी कम होने पर आवश्यकतानुसार फूल आने से पहले एक हल्की सिंचाई तथा दूसरी सिंचाई फलियाँ बनते समय करनी चाहिये।

खरपतवार नियन्त्रण

निराई–गुड़ाई दो बार, पहली बोआई के 20–25 दिन बाद, दूसरी 40–45 दिन बाद करते है। खरपतवारों के रासायनिक नियन्त्रण के लिये 3.3 लीटर पेण्डीमेथीलीन 800 लीटर पानी में घोलकर बोआई के तुरन्त बाद छिड़काव करना चाहिये।

एकीकृत रोग–कीट प्रबन्धन

उकठा रोग : उकठा रोग में पत्तियों के पीला पड़ने के बाद ऊपरी भाग झुक जाता है एवं पूरा पौधा सूख जाता है। जड़े अविकसित रह जाती हैं एवं उनका रंग हल्का भूरा होता है।
प्रबन्धन : इस रोग की रोकथाम के लिये रोग अवरोधी प्रजातियाँ जैसे पन्त मसूर– 4, पन्त मसूर– 406, पन्त मसूर– 639, डी.पी.ए.– 15 या डी.पी.ए.– 62 बोयें। फसल–चक्र अपनायें।

बुकनी रोग : यह रोग बोआई के लगभग 3 माह बाद प्रारम्भ होता है। बुकनी रोग में पत्तियाँ, फलियाँ चूर्ण से ढ़क जाती हैं।
प्रबन्धन : इसकी रोकथाम हेतु रोग अवरोधी प्रजातियों की बोआई करनी चाहिये। प्रति हेक्टेयर घुलनशील गंधक 3.0 किलोग्राम की दर से छिड़काव करें।

किट्ट रोग : किट्ट रोग में पत्तियों एवं तनों पर गुलाबी व भूरे धब्बे बन जाते हैं। रोग के अधिक होने पर पौधा सूख भी जाता है।
प्रबन्धन : इसकी रोकथाम हेतु रोग प्रतिरोधी प्रजातियाँ जैसे– पन्त मसूर–406 की बोआई करें। खेत में खर पतवार के अवशेष न रहने दें। फसल में 0.2 प्रतिशत मैकोजेब का छिड़काव करें।

कीट प्रबन्धन : सामान्यतः मसूर में किसी कीट से विशेष नुकसान नहीं होता है। कभी–कभी फली छेदक कीट लगता है। इस कीट के रोकथाम के लिये इण्डोसल्फान1.25 लीटर मात्रा 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करते है।

xfrfof/k pkVZ

जलवायु :
18° – 30° सेग्रे

↓

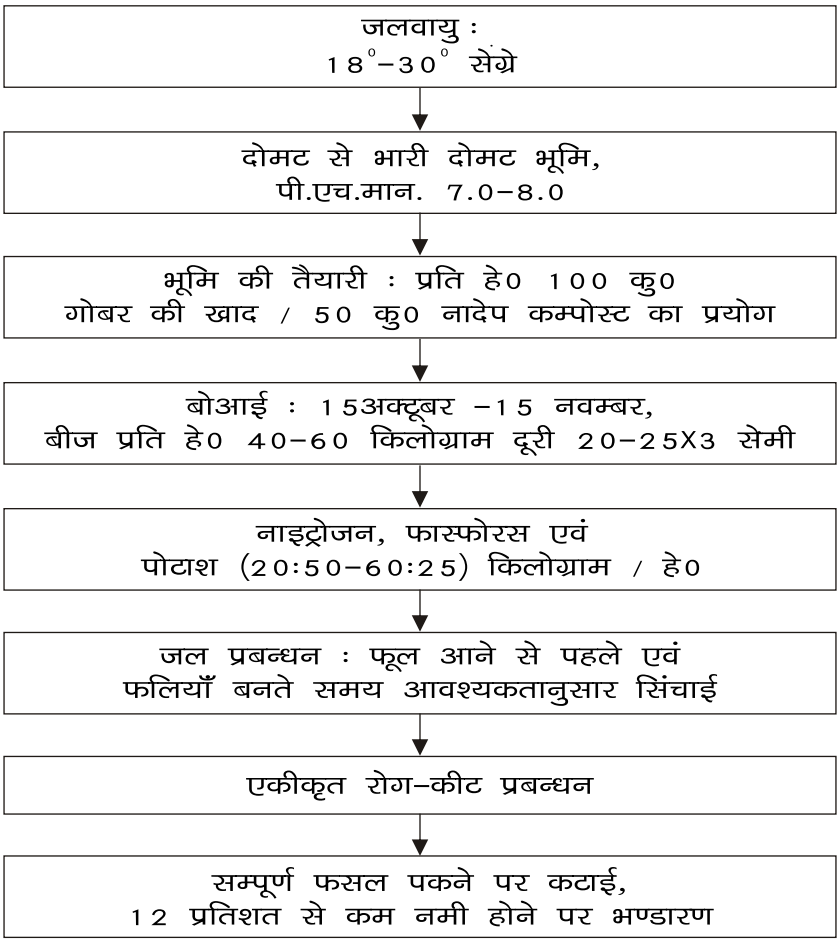

दोमट से भारी दोमट भूमि,
पी.एच.मान. 7.0–8.0

↓

भूमि की तैयारी : प्रति हे0 100 कु0
गोबर की खाद / 50 कु0 नादेप कम्पोस्ट का प्रयोग

↓

बोआई : 15अक्टूबर –15 नवम्बर,
बीज प्रति हे0 40–60 किलोग्राम दूरी 20–25X3 सेमी

↓

नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं
पोटाश (20:50–60:25) किलोग्राम / हे0

↓

जल प्रबन्धन : फूल आने से पहले एवं
फलियाँ बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई

↓

एकीकृत रोग–कीट प्रबन्धन

↓

सम्पूर्ण फसल पकने पर कटाई,
12 प्रतिशत से कम नमी होने पर भण्डारण

elj mRiknu dk ifr gDV;j vk;&0;; ¼o"kZ 2009½

mRikn	mit ¼d0@g0½	fod; nj ¼:0@d0½	lEi.k vk; ¼:0@g0½	mRiknu ykxr ¼:0@g0½	'k) vk; ¼:0@g0½	ykHk ykxr vuikr
elj	16	1870	29920	13000	16920	2-3%1